पाठ 9: यशपाल (लखनवी अंदाज़)

1. लेखक परिचय (Author Introduction)

- **लेखक का नाम:** यशपाल (हिंदी साहित्य के प्रमुख मार्क्सवादी / प्रगतिवादी कथाकार)।
- **प्रमुख रचनाएँ:** झूठा सच, दिव्या, दादा कामरेड, देशद्रोही।
- **विशेषता:** इनकी रचनाओं में समाज के यथार्थ (सच्चाई) का चित्रण और वर्ग-भेद (Class divide) पर तीखा व्यंग्य होता है।

2. पाठ का प्रसंग (Context of the Chapter)

यह पाठ एक **व्यंग्य (Satire)** है। यशपाल जी ने यह साबित करने के लिए यह कहानी लिखी थी कि बिना विचार (Theme), बिना घटना (Plot) और बिना पात्रों (Characters) के कोई कहानी नहीं लिखी जा सकती। साथ ही यह पाठ पतनशील **सामंती वर्ग (नवाबों)** की दिखावटी जीवन-शैली पर भी एक करारी चोट है।

Scholbit

3. विस्तृत सारांश (Detailed Summary)

ट्रेन का डिब्बा: लेखक को पास के स्टेशन तक जाना था, इसलिए उन्होंने सेकंड क्लास का टिकट लिया ताकि एकांत में बैठकर नई कहानी के बारे में सोच सकें। डिब्बे में पहले से ही लखनऊ के एक नवाब साहब बैठे थे। उनके सामने एक तौलिए पर दो ताज़े खीरे रखे थे।

नवाब साहब का व्यवहार: लेखक के आने से नवाब साहब को असुविधा हुई। उन्होंने लेखक से बात करने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। कुछ देर बाद नवाब साहब ने खीरों को धोया, काटा, उनके सिर घिसकर झाग निकाला (कड़वापन दूर करने के लिए), और उन पर जीरा-नमक और लाल मिर्च बुरक (छिड़क) दी।

नवाबी शान का दिखावा: नवाब साहब ने लेखक से खीरा खाने के लिए पूछा, लेकिन लेखक एक बार मना कर चुका था, इसलिए आत्मसम्मान बचाने के लिए दोबारा मना कर दिया। अब अपनी 'नवाबी शान' (अमीरी) का दिखावा करने के लिए नवाब साहब ने खीरे की एक-एक फाँक को मुँह तक उठाया, उसे सूँघा, और बिना खाए ही खिड़की से बाहर फेंक दिया।

बिना खाए डकार: सारे खीरे फेंकने के बाद नवाब साहब ने ऐसे डकार ली मानो उनका पेट भर गया हो। वे बोले कि खीरा होता तो लज़ीज़ है, पर मेदे (पेट) पर बोझ डाल देता है। लेखक यह देखकर चकित रह गया कि जब बिना खाए पेट भर सकता है, तो क्या बिना घटना और पात्रों के कहानी नहीं लिखी जा सकती?

4. मुख्य पात्रों का चरित्र-चित्रण (Character Sketches)

- **नवाब साहब:** एक दिखावटी और बनावटी व्यक्ति। वे वास्तविकता से दूर रहकर झूठी शान (रईसी) का दिखावा करते हैं। एक साधारण खीरे को भी वे नवाबी अंदाज़ में सूँघकर फेंक देते हैं। उनका यह व्यवहार पतनशील सामंती व्यवस्था का प्रतीक है।

5. पाठ का मूल भाव / संदेश (Central Theme)

इस पाठ का संदेश यह है कि व्यक्ति को वास्तविकता (Reality) में जीना चाहिए। जो लोग समाज में झूठा दिखावा और बनावटी जीवन (Artificial lifestyle) जीते हैं, वे अंततः उपहास (मज़ाक) का पात्र बनते हैं। दूसरा साहित्यिक संदेश यह है कि किसी भी कहानी को रचने के लिए विचार, घटना और पात्रों का होना अत्यंत आवश्यक है।

6. महत्त्वपूर्ण बिंदु (Key Points for Exam)

- **खीरे की तैयारी:** नवाब साहब ने बड़ी बारीकी से खीरा काटा और नमक-मिर्च लगाया, जिससे उनके मुँह में पानी आ रहा था।
- **लेखक का इनकार:** लेखक का आत्मसम्मान (Self-respect) उसे दोबारा खीरा माँगने से रोकता है।
- **सूँघकर फेंकना:** नवाबी शान दिखाने का तरीका।

Schorbit